तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी

(दिल्ली सल्तनत)

मध्यकालीन भारतीय इतिहास का निर्माण (Construction of Medieval Indian History)

मध्यकालीन इतिहास जानने के स्रोतों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—साहित्यिक स्रोत तथा पुरातात्विक स्रोत।

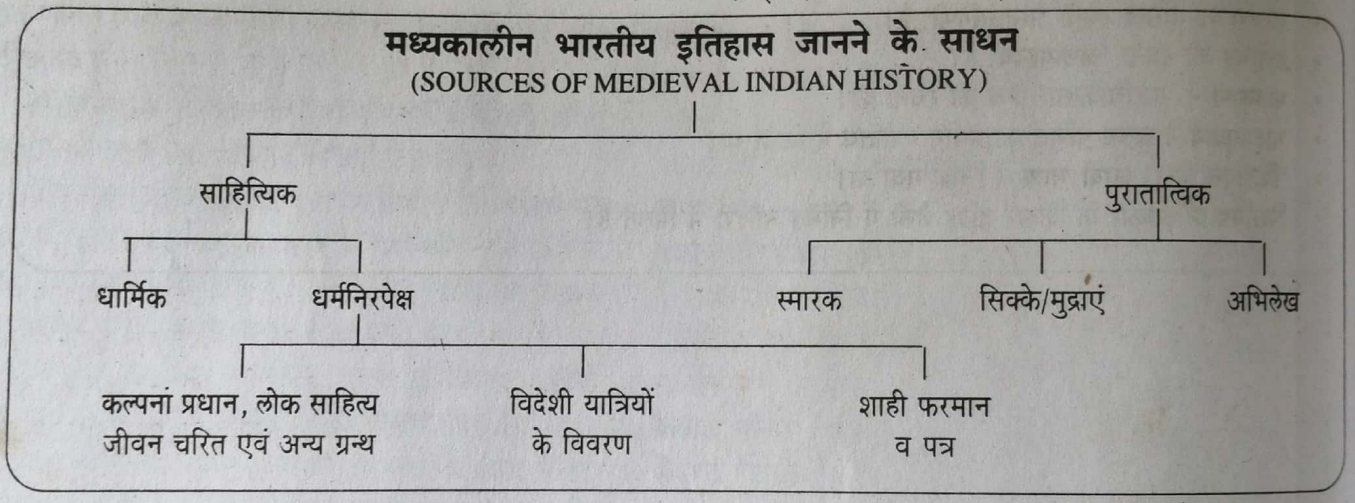

I. **साहित्यिक स्रोत** (Literary Sources)—साहित्यिक स्रोतों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—धार्मिक व धर्मनिरपेक्ष।

1. **धार्मिक ग्रन्थ** (Religious Writings)—धार्मिकग्रन्थों की श्रेणी में वे रचनाएं आती हैं जो किसी धर्म से सम्बन्धित होती हैं। मध्यकाल में सूरदास, तुलसीदास, रसखान की रचनाएं तथा मीराबाई, चैतन्य, विद्यापति ठाकुर के गेय पद एवं हमदानी, जखीरात-उल-मुल्क नामक तुर्की ग्रन्थ आदि महत्वपूर्ण हैं। इनसे तत्कालीन धार्मिक एवं सामाजिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।

2. **धर्मनिरपेक्ष** (Secular Literature)—धर्मनिरपेक्ष विवरणों को निम्नलिखित तीन भागों में बांटा जा सकता है :

(अ) कल्पना प्रधान लोक साहित्य, जीवन चरित व अन्य ग्रन्थ—विदेशी यात्रियों के विवरण तथा शाही फरमानों व पत्रों को छोड़कर सभी धर्मनिरपेक्ष साहित्य इसी शीर्षक में आ जाते हैं। कुछ प्रमुख ग्रन्थ जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं इस प्रकार हैं :

फतहनामा—इसे चचनामा भी कहा जाता है। इससे सिन्ध के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

राजतरंगिणी—इसकी रचना कल्हण ने की। यह कश्मीर के इतिहास पर प्रकाश डालती है।

तुज्क-ए-बाबरी—यह बाबर की कृति है। इसमें बाबर की आत्मकथा है।

हुमायूंनामा—इसे गुलबदन बेगम ने लिखा। इससे सांस्कृतिक इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

तुज्क-ए-जहांगीरी—यह जहांगीर की आत्मकथा है। यह तत्कालीन संस्कृति का अध्ययन कराती है।

तारीखे शेरशाही—इस ग्रन्थ से लोदी व सूरवंश की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक स्थिति का ज्ञान होता है।

अकबरनामा—अबुल फजल द्वारा रचित यह कृति अकबरकालीन इतिहास जानने की महत्वपूर्ण कृति है।

Scanned with CamScanner

बादशाहनामा—इसे शाहजहां के काल में अबुल हमीद लाहौरी ने लिखा। यह तत्कालीन इतिहास पर प्रकाश डालता है।

मुंतखबउल्लुबाब—इसे औरंगजेब के समय खफी खां ने लिखा। यह तत्कालीन इतिहास जानने की महत्वपूर्ण कृति है।

पद्मावत—मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित यह कृति अलाउद्दीन के युद्धों तथा चित्तौड़ की रानी पद्मिनी की प्रेम कथा पर प्रकाश डालती है। साथ ही इससे दक्षिण की सामाजिक दशा का ज्ञान होता है।

पुरुष परीक्षा—विद्यापति ठाकुर द्वारा रचित यह ग्रन्थ नीतिविषयक ग्रन्थ है जो कि हिन्दू व मुस्लिम दोनों वर्गों का वर्णन करता है।

अमीर खुसरो के ग्रन्थ—अमीर खुसरो कोई इतिहासकार नहीं था, परन्तु उसने जो भी रचनाएं लिखीं उनमें प्रायः ऐतिहासिक विषय आ गए। इस प्रकार की उनकी सभी कृतियां 1289 ई. से 1325 ई. के मध्य की हैं। उसकी कृति 'किरान उस सादेन' में अमीरों के सामाजिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है। मिफताहुल फुतूह, जलालुद्दीन खिलजी के सैन्य अभियानों पर प्रकाश डालती है। खजाइन उल फुतूह में अलाउद्दीन की गुजरात, मालवा व वारंगल की विजयों का वर्णन है। यह कृति मलिक काफूर के दक्षिण अभियान पर प्रकाश डालती है। मसनबी तुगलकनामा में खुसरोशाह के विरुद्ध गयासुद्दीन की विजय का उल्लेख मिलता है।

(ब) विदेशी यात्रियों के विवरण—मध्य काल में भारत में अरब, चीन, यूनान, पर्शिया, तुर्क, यूरोप आदि देशों से अनेक यात्री आए, जिनके संस्मरण तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। तेरहवीं शताब्दी में वेनिस से आए प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो के विवरण से दक्षिण भारत की सामाजिक व आर्थिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है। मुहम्मद तुगलक के समय आए इब्नबतूना ने तत्कालीन युग की सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। निकोलो कोण्टी नामक यात्री ने 1419 ई. से 1444 ई. तक की भारत की स्थिति पर प्रकाश डाला है। पर्शियन राजदूत अब्दुर्रज्जाक के विवरण विजय नगर साम्राज्य की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डालते हैं। तुर्की यात्री अलीरैस ने 1553 ई. से 1556 ई. तक की भारत की स्थिति का विवरण लिखा। बरनी ने मुगलकालीन सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला तो जहांगीर के काल में आए सर टामस रो, विलयम हाकिन्स, डीलेट एवं पेल नामक यूरोपीय यात्रियों ने तत्कालीन आर्थिक स्थिति पर महत्वपूर्ण विवरण लिखे हैं।

(स) शाही फरमान व पत्र—मध्यकालीन सुल्तानों व राजाओं के अपने अधिकारियों के नाम लिखे फरमान व पत्र राजनीतिक स्थिति पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं। इन पत्रों से प्रान्तीय स्थिति पर विशेष रूप से प्रकाश पड़ता है। इस प्रकार के फरमान व पत्र जो कि विदेशी राजाओं को भी लिखे जाते थे तत्कालीन विदेश नीति व आर्थिक नीति पर भी पर्याप्त प्रकाश डालते हैं।

II. **पुरातात्विक स्रोत** (Archaeological Sources)—पुरातात्विक स्रोतों को हम निम्नलिखित भागों में विभक्त कर सकते हैं :

(1) **स्मारक** (Monuments)—मध्यकालीन भवनों, मूर्तियों एवं भग्नावशेषों से तत्कालीन भारतीय इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। डेविड शैली में निर्मित कांचीपुरम् का कैलाश मन्दिर, तंजावूर में राजराज प्रथम द्वारा बनाया गया वृहदेश्वर मन्दिर, चोल सम्राटों द्वारा बनवाए गए दक्षिण भारतीय मन्दिरों की कला पर प्रकाश डालते हैं। **मथुरा, उड़ीसा, आबू के मन्दिरों से राजपूतकालीन स्थापत्य कला, मूर्ति कला व सांस्कृतिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है।** अजमेर की 'अढाई दिन का झोंपड़ा' नामक इमारत, कुतुबमीनार आदि गुलाम वंश के इतिहास पर प्रकाश डालते हैं तो तत्कालीन सुल्तानों की रुचि पर भी प्रकाश डालते हैं। बाबर, अकबर एवं जहांगीर के समय निर्मित इमारतें तत्कालीन शासकों की रुचि व स्थापत्य, वास्तु कला पर प्रकाश डालती हैं। शाहजहां द्वारा बनवाया गया ताजमहल स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना है। ये सभी भग्नावशेष, इमारतें, स्मारक आदि तिथि क्रम व सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

(2) **सिक्के व मुद्राएं** (Coins)—मुद्राएं किसी भी काल की आर्थिक स्थिति के विषय में जानकारी प्राप्त करने का महत्वपूर्ण साधन हैं। मध्यकालीन सिक्कों से तत्कालीन सुल्तानों व शासकों के समय की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है। उदाहरणार्थ, मुहम्मद तुगलक द्वारा सांकेतिक मुद्रा चलाने की योजना इस बात को स्पष्ट करती है कि आर्थिक दृष्टि से उसका काल संकटग्रस्त रहा होगा। इसी प्रकार सिक्के साम्राज्य विस्तार की जानकारी के लिए भी उपयोगी सिद्ध होते हैं। सिक्कों से तत्कालीन शासकों की अभिरुचि, धार्मिक स्थिति, कला एवं विदेशी व्यापार व वाणिज्य पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

(3) **अभिलेख** (Inscription)—मध्य काल के प्रारम्भिक भाग विशेष रूप से दक्षिण भारत के इतिहास को जानने के लिए अभिलेखों का महत्वपूर्ण स्थान है। अभिलेख शिलाओं, स्तम्भों, धातु पत्रों, स्तूपों व मन्दिरों की दीवारों पर प्राप्त हुए हैं। **इन अभिलेखों से सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक व राजनीतिक स्थिति का ज्ञान होता है।** वंश अनुक्रम व तिथिक्रम की दृष्टि से भी ये महत्वपूर्ण हैं। विजयनगर साम्राज्य से सम्बन्धित अभिलेख, चोलों के अभिलेख, पाल, प्रतिहार व राष्ट्रकूट शासकों के अभिलेख तत्कालीन राजनीतिक गतिविधियों व प्रशासन की जानकारी के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

Scanned with CamScanner

मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत : प्रमुख विदेशी यात्री

(1) **अल्बेरुनी**—भारत आने वाले प्रमुख अरब यात्रियों में अल्बेरुनी मुहम्मद इब्न अहमद (1024-1030 ई.), महमूद गजनवी के सोमनाथ पर आक्रमण के समय भारत आया था। उसने भारत में रहते हुए खगोल विद्या, ज्योतिष, प्राकृतिक विज्ञान, धातुशास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, रसायन शास्त्र, आदि विषयों का गहन अध्ययन किया। उसकी पुस्तक **तहकीक-ए-हिन्द** (हिन्दुस्तान का परिचय) ग्यारहवीं शताब्दी के भारत का विवरण उपलब्ध कराती है।

(2) **चाऊजूकुआ**—यह चीनी व्यापारी और यात्री दक्षिण भारत में 1225 से 1254 ई. के मध्य सक्रिय रहा था। इसने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक '**चु-फान-ची**' में दक्षिण भारत और चीन के वाणिज्यिक सम्बन्धों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी है।

(3) **मार्कोपोलो**—यह वेनिस निवासी इटालियन यात्री था जिसे **मध्यकालीन यात्रियों का राजकुमार** कहा जाता था। इसने चीन से फारस लौटते समय मार्ग में (1292-1293 ई.) दक्षिण भारत का भ्रमण किया। उसने दक्षिणी राज्यों तथा दक्षिणी भारत के लोगों के रहन-सहन, विश्वासों और परम्पराओं पर विस्तृत विवरण लिखे। भारत के आर्थिक इतिहास तथा सामाजिक इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी हमें उसके यात्रा वृत्तान्त '**सर मार्कोपोलो की पुस्तक**' से मिलती है।

(4) **इब्नबतूता**—यह मोरक्को निवासी अरब यात्री था। यह विश्व के विभिन्न देशों की यात्रा करता हुआ 1333 ई. में सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में भारत आया था। यह तत्कालीन समय में दिल्ली का काजी नियुक्त किया गया था। आठ वर्ष के पश्चात् मुहम्मद तुगलक ने इसे चीन (राजदूत के रूप में) भेजा। 1353 ई. में मोरक्को वापस होने पर इसने यात्रा-विवरण **रेहला** नामक पुस्तक में लिखा जो तत्कालीन भारत की भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक दशा का महत्वपूर्ण स्रोत है।

(5) **निकोलोकोन्टी**—विजय नगर साम्राज्य की यात्रा करने वाला यह प्रथम इटालियन (यूरोपीय) यात्री था। यह विजयनगर के तत्कालीन शासक देवराय प्रथम के शासनकाल में (1420-21 में) आया था। लैटिन में लिखा इसका मूल यात्रा-वृत्तान्त अब प्राप्य नहीं है। इसने विजयनगर के वैभव, नगर, दरबार, लोगों के रहन-सहन, प्रथाएं-परम्पराएं, विश्वास, आर्थिक स्थिति का विस्तृत उल्लेख किया है।

(6) **अब्दुर्रज्जाक**—यह फारस का यात्री कालीकट के जमोरिन के यहां 1443 ई. में शाहरुख का राजदूत बनकर आया था। इसने 1443-44 ई. में विजयनगर साम्राज्य की यात्रा की थी। इस काल में विजयनगर शहर को देखकर आविर्भूत हो गया था। उसने लिखा है, "मैंने पूरे विश्व में इसके समान दूसरा शहर न कोई देखा है, न सुना है।" यह इस प्रकार बना हुआ है कि एक के भीतर एक इसमें सात परकोटे हैं। इसका यात्रा-विवरण हमें तत्कालीन प्रशासन, नागरिक जीवन, सामाजिक-आर्थिक स्थिति की महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराता है।

(7) **एथेनेसियस निकितिन**—यह रूसी यात्री घोड़ों का व्यापारी था। इसने पन्द्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बहमनी राज्य की यात्रा की थी तथा अनेक वर्ष बीदर में व्यतीत किए थे। इसके यात्रा-विवरण से बहमनी राज्य के प्रशासन, लोगों के रहन-सहन की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

(8) **दुआर्ते बारबोसा**—यह भारत में 1500 ई. से 1516 ई. तक पुर्तगाली अधिकारी के रूप में रहा था। इसने पुर्तगाल वापस होने पर अपना यात्रा-विवरण 'दुआर्ते बारबोसा की पुस्तक' (दो खण्डों में) प्रकाशित करायी। इसमें विजयनगर साम्राज्य का विस्तृत उल्लेख है जो तत्कालीन आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण स्रोत स्वीकार किया जाता है।

(9) **लुडोविको डि वार्थेमा**—इस पुर्तगाली यात्री ने 1502 से 1508 ई. के मध्य भारत की यात्रा की थी। इसके विस्तृत यात्रा-विवरण '**लुडोविको डि वार्थेमा का यात्रा वृतान्त**' से गोआ और कालीकट के पश्चिमी तट पर स्थित पत्तनों की, विजयनगर साम्राज्य की राजधानी की, तत्कालीन दक्षिणी भारत की सामाजिक, आर्थिक दशा की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

(10) **डोमिंगो पायज**—यह पुर्तगाली यात्री कृष्णदेवराय के शासनकाल में 1520 ई. से 1522 ई. के मध्य विजयनगर आया था। **डोमिंगो पायज की कथा** अर्थात् उसके यात्रा-विवरण में विजयनगर के यशस्वी शासक कृष्णदेवराय के शासन का तथा विजयनगर का विस्तृत उल्लेख है।

(11) **फर्नाओ नूनीज**—यह पुर्तगाली घोड़ों का व्यापारी था। यह विजयनगर साम्राज्य में 1535 ई. से 1537 ई. तक रहा था। इसने '**क्रानिकल ऑफ फर्नास (फर्नाओ) नूनीज**' पुस्तक में विजयनगर साम्राज्य के प्रारम्भ से लेकर अच्युत देवराय के शासनकाल तक का इतिहास प्रस्तुत किया है।

(12) **सीजर फ्रेडरिक**—इस पुर्तगाली यात्री ने तालीकोट के युद्ध (1565 ई.) के बाद विजयनगर साम्राज्य का भ्रमण किया था तथा इस महान नगर के विध्वंस का विस्तृत उल्लेख अपने यात्रा-विवरण में किया है जो हमारी जानकारी का महत्वपूर्ण स्रोत है।

(13) **राल्फ फिच**—यह अंग्रेज व्यापारी (1583-1591 ई.) सर्वप्रथम अंग्रेज व्यापारी था जिसने फतेहपुर सीकरी व आगरा की यात्रा की थी। इसने भारत के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण करके सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के व्यापारिक स्थलों, महत्वपूर्ण नगरों तथा जन-जीवन का विस्तृत विवरण दिया है।

Scanned with CamScanner

(14) **जॉन ह्युगे वॉ लिसॉतन**—यह डच यात्री था जिसने 1583 ई. में भारत की यात्रा की थी। इसने अपने यात्रा-वृत्तान्त '**द वॉएज ऑफ जॉन ह्युगे वॉ लिसॉतन टू द ईस्ट इंडीज**' में दक्षिण भारत के सामाजिक-आर्थिक जीवन की विस्तृत जानकारी उपलब्ध करायी है।

(15) **विलियम हाकिन्स**—यह जहांगीर के दरबार में ब्रिटिश राजा जेम्स प्रथम का अंग्रेज राजदूत बनकर आया था जो 1608 से 1611 ई. तक मुगल दरबार में रहा था। इसके यात्रा वृत्तान्त में जहांगीर के शासनकाल का विस्तृत उल्लेख है।

(16) **सर टामस रो**—सम्राट जहांगीर के दरबार में आने वाले शिष्टमण्डल का यह नायक था जो 1615 से 1619 तक रहा। इसने सम्राट जहांगीर के साथ मांडू व अहमदाबाद की यात्रा भी की थी। '**पूर्वी द्वीपों की यात्रा**' नामक यात्रा-विवरण में इसने तत्कालीन भारत की विस्तृत जानकारी दी है।

(17) **पीत्रो देलावाले**—इस इटालियन यात्री ने 1623 से 1626 ई. के मध्य सूरत तथा भारत के तटीय क्षेत्रों की यात्रा की थी। इसने तत्कालीन भारत की सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक दशा का तथा सती प्रथा का विस्तृत उल्लेख अपने यात्रा विवरण में किया है।

(18) **पीटर मुंडी**—इस इटालियन यात्री ने 1630 ई. से 1634 ई. के मध्य (शाहजहां के शासनकाल में) भारत की यात्रा की थी। इसने अपने यात्रा विवरण में मुगलकालीन भारतीय जनमानस की स्थिति का महत्वपूर्ण विवरण दिया है।

(19) **जीन वैपतिस्ते ट्रैवर्नियर**—इस फ्रांसीसी यात्री ने 1638 ई. से 1663 ई. के मध्य भारत की छः बार यात्रा की थी। इसने अपने यात्रा विवरण '**ट्रैवल्स इन इंडिया**' में शाहजहां और औरंगजेब के शासनकाल का विवरण दिया है। इस विवरण से समुद्री मार्गों, सिक्कों, माप-तौल, निर्यात-व्यापार, यातायात की विस्तृत ज्ञानकारी उपलब्ध होती है। यह यात्री हीरे का प्रसिद्ध व्यापारी था। अतः हीरा व्यापार व खनिजों का विवरण बहुत महत्वपूर्ण है।

(20) **निकोलाओ मनूची**—यह इटालियन यात्री शाहजहां के काल में भारत आया था तथा शहजादा दारा की सेना में तोपची नियुक्त हुआ था। दारा की पराजय, मृत्यु के बाद इसने चिकित्सक का व्यवसाय अपनाया। इसने भारत के यात्रा संस्मरणों को '**स्टोरियो दोर मोगोर**' नाम से चार खंडों में लिखा। इस ग्रन्थ में इसने दक्षिण भारत तथा औद्योगिक केन्द्रों की महत्वपूर्ण जानकारी दी है। सत्रहवीं शताब्दी के भारत पर इसका ग्रन्थ मूल्यवान स्रोत स्वीकार किया जाता है।

(21) **फ्रांसिस वर्नियर**—यह फ्रांसीसी यात्री व्यवसाय से चिकित्सक था। यह शाहजहां के दरवार से सम्बन्धित था तथा दारा और औरंगजेब के मध्य होने वाले उत्तराधिकार युद्ध का साक्षी रहा था। इसने अपने पुस्तक '**हिस्ट्री ऑफ द लेट रैवेलियन इन द स्टेट्स ऑफ द ग्रेट मुगल**' में इस युद्ध का विस्तृत उल्लेख किया है। वर्नियर आमेर के मिर्जा राजा जयसिंह, गोआ में पुर्तगालियों में तथा गोलकुण्डा के दरबार में भी रहा था। मद्रास में 1717 ई. में इसकी मृत्यु हो गई थी। इसने '**ट्रेवल इन द मुगल एम्पायर**' में तत्कालीन भारत का महत्वपूर्ण वर्णन किया है जो मुगल काल के राजनीतिक, सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक जीवन की जानकारी का महत्वपूर्ण स्रोत है।

भारतीय इतिहासकार व इतिहास लेखन

(1) **मिन्हाज सिराज**—मिन्हाज सिराज कृत '**तबकात-ए-नासिरी**' राजनीतिक इतिहास 'सल्तनल काल के प्रारम्भिक सुल्तानों' (कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश, रजिया, नासिरुद्दीन) का महत्वपूर्ण स्रोत है।

(2) **जियाउद्दीन बरनी**—जियाउद्दीन बरनी की कृतियों में '**तारीख-ए-फिरोजशाही**' व '**फतवा-ए-जहांदारी**' उल्लेखनीय हैं। तारीख-ए-फिरोजशाही में सुल्तान बलबन से लेकर सुल्तान फिरोज तुगलक के समय (1357 ई. तक) का वर्णन है। यह तत्कालीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक दशा का विस्तृत विवरण उपलब्ध कराता है। फतवा-ए-जहांदारी में प्रशासन के सिद्धान्तों का विवरण है। दोनों कृतियां सल्तनतकाल (1265-1357 ई.) के इतिहास की जानकारी के लिए महत्वपूर्ण स्रोत है।

(3) **अमीर खुसरो**—1252 ई. में जन्मे अमीर खुसरो सूफी सन्त निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे। 1325 ई. में उनकी मृत्यु हो गई। वे सुल्तान जलालुद्दीन, सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में रहे थे। उनकी पांच प्रसिद्ध ऐतिहासिक मसनवी (पद्य रचनाएं) हैं जो समकालीन भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन की महत्वपूर्ण जानकारी के मुख्य स्रोत हैं :

पहली मसनवी 'किरानुस्सादैन' में सुल्तान मुईजुद्दीन कैकुबाद के समय का विवरण है।

दूसरी मसनवी 'मिफताहुल फुतूह' में सुल्तान जलालुद्दीन के राज्यकाल का विवरण है।

तीसरी मसनवी 'दिवलरानी-खिज्र खां' में दिवलरानी व शहजादा खिज्र खां के प्रेम-विरह का वर्णन है।

चौथी मसनवी 'नूह सिपेहर' में सुल्तान मुबारकशाह खिलजी के समय का वर्णन है।

पांचवीं मसनवी 'तुगलकनामा' में सुल्तान गियासुद्दीन तुगलक की खुसरोशाह पर विजय का विवरण है। अमीर खुसरो ने गद्य में सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के राज्यकाल का विस्तृत विवरण 'खजाइनुल फुतूह' में किया है। इस प्रकार अमीर खुसरो तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी का प्रसिद्ध इतिहासकार है।

Scanned with CamScanner

(4) **ऐन-उल-मुल्क मुल्तानी**—ऐन-उल-मुल्क मुल्तानी ने सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी की सेवा में धार व उज्जैन की सूबेदारी प्राप्त की थी। अपनी प्रशासनिक क्षमता से उसने सुल्तान मुहम्मद तुगलक को भी प्रभावित कर लिया था। वह फिरोज तुगलक का भी कृपापात्र रहा। उसने अपनी पुस्तक '**इंशा-ए-महरू**' अथवा '**मनसत-ए-महरू**' में अनेक राजकीय दस्तावेजों, याचिकाओं, पत्रों का उल्लेख करते हुए तत्कालीन भारत की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, प्रशासनिक व्यवस्था का विस्तृत वर्णन किया है। यह कृति तुगलक वंश के इतिहास जानने का महत्वपूर्ण स्रोत है।

(5) **सुल्तान फिरोजशाह तुगलक**—सुल्तान फिरोजशाह तुगलक द्वारा लिखित 32 पृष्ठों की पुस्तक '**फतूहात-ए-फिरोजशाही**' उसके राज्य काल की विजयों, प्रशासनिक दृष्टिकोण का विवरण देती है।

(6) **इसामी**—इसामी कृत '**फुतूह-उस-सलातीन**' से गजनी वंश के उदय से सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल तक के भारतीय सुल्तानों का विश्वसनीय इतिहास उपलब्ध होता है। इसकी रचना दौलताबाद में मुहम्मद तुगलक के कार्यकाल में फिरदौसी के शाहनामा की शैली पर हुई थी।

(7) **यह्या**—यह्या दिल्ली के सैय्यद सुल्तान मुबारकशाह के संरक्षण में रहे थे। इन्होंने अपनी पुस्तक '**तारीख-ए-मुबारकशाही**' इसी सुल्तान को समर्पित की है। इस पुस्तक में सुल्तान मुहम्मद गोरी के शासन काल में मुबारकशाह के समय (1434 ई.) तक का वर्णन उपलब्ध है तथा तत्कालीन भारत के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक जीवन पर विश्वसनीय प्रकाश डालता है।

(8) **दीवान अली मुहम्मद खां**—दीवान अली मुहम्मद खां ने अपनी प्रसिद्ध कृति '**मीरात-ए-अहमदी**' में दिल्ली के सुल्तानों तथा गुजरात के इतिहास की महत्वपूर्ण स्रोत-सामग्री उपलब्ध करायी है। इसमें उपलब्ध सांख्यिकी जानकारी इसे अत्यन्त मूल्यवान स्रोत सिद्ध करती है।

(9) **बाबर**—मुगल बादशाह बाबर ने तुर्की भाषा में अपनी आत्मकथा '**तुजुक-ए-बाबरी**' अथवा '**बाबरनामा**' की रचना की थी, इसमें भारत का भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक जीवन विश्वसनीय रूप में उपलब्ध है।

(10) **गुलबदन बेगम**—मुगल बादशाह बाबर की पुत्री गुलबदन बेगम ने अपने भाई के नाम पर फारसी में—'**हुमायूंनामा**' की रचना की थी। इसमें बाबर का संक्षिप्त तथा हुमायूं का विस्तृत वर्णन उपलब्ध है। यह हुमायूं के काल का महत्वपूर्ण स्रोत है।

(11) **अब्बास खान शेरवानी**—अब्बास खान शेरवानी ने अकवर के आदेश से '**तारीख-ए-शेरशाही**' अथवा '**तोहफा-ए-अकबरशाही**' की रचना की थी। इस कृति में शेरशाह सूरी और उसके उत्तराधिकारियों के जीवन, शासन का वर्णन है।

(12) **अबुल फजल**—अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फजल ने '**अकबरनामा**' और '**आइन-ए-अकबरी**' की रचना की थी। इन कृतियों में तैमूर वंश से लेकर अकबर के समय (1601 ई.) तक का इतिहास विश्वसनीय ढंग से उपलब्ध है तथा मुगल काल की सांख्यिकीय तथा प्रशासनिक समीक्षा है। अकबर के शासनकाल के नियमों, राज्यादेशों, भौगोलिकता, राजस्व प्रणाली, सामाजिक प्रथाओं की विस्तृत जानकारी के लिए यह कृतियां अमूल्य स्रोत हैं। अबुल फजल प्रसिद्ध विद्वान, इतिहासविद् था तथा दरबार में उसका उल्लेखनीय स्थान था।

(13) **अब्दुल कादिर बदायूंनी**—अकबर के समकालीन अब्दुल कादिर बदायूंनी अकबर के दरबार में थे। इन्होंने अपनी प्रसिद्ध कृति '**मुन्तखब उत् तवारीख**' अकबर से छुपाकर लिखी थी, जिसमें गजनवियों के समय से लेकर अकबर के शासन के चालीस वर्षों तक के भारत का इतिहास उपलब्ध है। यह अकबर का कटु आलोचक था; इसने अपने ग्रन्थ में अकबर की धार्मिक नीति व दीन इलाही धर्म की कटु आलोचना की है। यह ग्रन्थ अकबर की मृत्यु के पश्चात् प्रकाश में आया था।

(14) **निजामुद्दीन अहमद**—निजामुद्दीन अहमद ने अपनी प्रसिद्ध कृति '**तबकात-ए-अकबरी**' में भारत में इस्लाम के आविर्भाव से लेकर 1593-94 ई. तक के समय का इतिहास विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत किया है। यह ग्रन्थ सैयद और लोदी सुल्तानों के इतिहास जानने का महत्वपूर्ण स्रोत है।

(15) **सम्राट जहांगीर**—सम्राट जहांगीर ने अपने संस्मरण फारसी में '**तुजुक-ए-जहांगीरी**' (जहांगीरनामा) में लिखे हैं। इसमें उसने अपने शासनकाल का वर्णन किया है।

(16) **मुहम्मद कासिम हिन्दू शाह अस्तराबादी (फरिश्ता)**—मुहम्मद कासिम हिन्दू शाह अस्तराबादी जो फरिश्ता के नाम से चर्चित रहा था, ने अपनी कृति '**तारीख-ए-फरिश्ता**' अथवा '**गुलशन-ए-इब्राहीमी**' में महमूद गजनवी के काल से 1607 ई. तक के भारत का इतिहास वर्णित किया है। दक्षिण भारत के इतिहास जानने का यह महत्वपूर्ण स्रोत है।

(17) **अब्दुल हमीद लाहौरी**—अब्दुल हमीद लाहौरी ने शाहजहां के शासनकाल में '**बादशाहनामा**' की रचना की थी। इस कृति में शाहजहां के बाल्यकाल से लेकर नवम्बर 1649 ई. तक का विवरण उपलब्ध है। यह कृति शाहजहां के शासनकाल का इतिहास जानने हेतु प्रथम कोटि की अधिकारिक पुस्तक स्वीकार की जाती है।

(18) **इनायत खां**—इनायत खां शाहजहां के दरबार में उच्चाधिकारी थे, इन्होंने शाहजहां के शासनकाल के तेरह वर्ष तक का संकलन '**शाहजहांनामा**' में किया है।

Scanned with CamScanner

(19) **मुहम्मद साकी मुस्तैद खां**—मुहम्मद साकी मुस्तैद खां 40 वर्ष तक औरंगजेब की प्रशासनिक सेवा में रहे थे। इन्होंने औरंगजेब की मृत्यु के उपरान्त '**मआसिर-ए-आलमगीरी**' की रचना की थी जो औरंगजेब के काल का इतिहास जानने का मुख्य स्रोत है।

(20) **मुहम्मद हाशिम खाफी खां**—मुहम्मद हाशिम खाफी खां ने अपनी प्रसिद्ध कृति '**मुन्तखब-उल-लुबाब**' अथवा '**तारीख-ए-खाफी खां**' में भारत पर मुसलमानों की विजय से लेकर मुगल सम्राट मुहम्मदशाह के शासन काल के चौदहवें वर्ष तक का विस्तृत विवरण दिया है। लेखक शाहजहां व औरंगजेब का समकालीन था। अतः उसकी कृति अपने समय का अमूल्य स्रोत है।

(21) **ईश्वरदास नागर**—ईश्वरदास नागर औरंगजेब के काल में जोधपुर सरकार के प्रभारी रहे थे। इनकी चर्चित कृति '**फतूहात-ए-आलमगीरी**' में औरंगजेब के शासनकाल की 1698 ई. तक की महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख है। इस कृति में राजस्थान व मालवा की घटनाओं की विश्वसनीय, प्रामाणिक जानकारी मिलती है।

इस प्रकार सम्पूर्ण विवेचन स्पष्ट करता है कि मध्यकालीन भारतीय इतिहास के विषय में जानकारी के लिए प्रचुर मात्रा में साहित्यिक व पुरातात्विक सामग्री उपलब्ध है।

Scanned with CamScanner